B.Ed - C6

[WOMEN EDUCATION IN BRITISH INDIA]

ब्रिटिश भारत में स्त्री-शिक्षा

ईस्ट इण्डिया कम्पनी शासन काल में :-

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने स्त्री-शिक्षा को अनावश्यक समझकर उसकी ओर रंचमात्र भी ध्यान नहीं दिया। सम्भवतः इसका कारण यह था कि उसे अपने प्रशासकीय एवं व्यावसायिक कार्यालयों के लिए शिक्षित महिलाओं की आवश्यकता नहीं थी इसके अतिरिक्त स्त्री-शिक्षा के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण अत्यधिक रूढ़िवादी था सन् 1938 में विलियम एडम ने स्त्री शिक्षा का वर्णन करते हुऐ लिखा है - "

"शिक्षा की समस्त स्थापित देशी संस्थाऐं केवल पुरुषों के लाभार्थ है। और समस्त महिला जगत को विधिपूर्वक अज्ञानता को अर्पित कर दिया गया"

कम्पनी के शासन काल में बालिका-विद्यालयों की स्थापना मिशनरियों और सरकारी एवं गैर-सरकारी मनुष्यों के व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरूप हुई सन् 1851 में मिशनरियों द्वारा 371 बालिकाओं-विद्यालयों का संचालन किया जा रहा था।

जिसमे शिक्षा ग्रहण करने वाली बालिकाओ की संख्या 11,193 थी व्यक्तिगत प्रयासो फलस्वरूप स्थापित किये जाने वाले बालिका - विद्यालयो मे सबसे प्रसिद्ध कलकत्ता का बैथ्यून स्कूल था इसका शिलान्यास सन् 1849 मे सरकार के कानून सदस्य श्री J.E.D Bethune के द्वारा किया गया था।

1854 से 1882 तक —

सन् 1854 से 1882 तक - सन् 1854 के बुड के आदेश - पत्र मे सर्वप्रथम स्त्री - शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया और कहा गया कि इस शिक्षा का प्रसार करने के लिए सभी सम्भव प्रयास किये जाये परिणामत: नव निर्मित शिक्षा विभागो ने अनेक स्थानो पर बालिकाओ के लिए प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था को इस प्रकार कम्पनी द्वारा उपेक्षित स्त्री - शिक्षा की प्रगति आरम्भ हुई 1882 से 2,697 बालिका - विद्यालय थे और उनमे अध्ययन करने वाली छात्राओ की संख्या 1,27,066 थी।

Scanned by TapScanner

1902 से 1921 तक :-

19वी शताब्दी की उत्तरार्द्ध मे आरम्भ होने वाले पुनरुत्थान के कारण स्त्री-शिक्षा की प्रभूत प्रगति हुई किन्तु इस प्रगति मे महिलाओं की अपेक्षा सरकार और पुरुषो ने अधिक योग दिया विद्या-प्रेमी लार्ड कर्जन ने स्त्री शिक्षा की पतित अवस्था मे क्षुब्ध होकर उत्थान करने का संकल्प किया अतः उसने सन् 1904 का शिक्षा सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव पारित करवाकर स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए अधिक धन व्यय किया, आदर्श बालिका-विद्यालयो की स्थापना की और अध्यापिका प्रशिक्षण का प्रावधान किया सन् 1913 के शिक्षा-सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव की सिफारिशो की फलस्वरूप स्त्री शिक्षा की प्रत्येक स्तर पर प्रगति हुई ब्रह्म समाज, आर्य समाज सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी जैसी अनेक सुधारवादी सामाजिक संस्थाओं ने स्त्री शिक्षा के मार्ग को प्रशस्त किया सन् 1904 मे श्रीमती ऐनी बेसेण्ट ने बनारस मे सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स स्कूल का निर्माण किया

Scanned by TapScanner

1916 के कर्वे और मण्डाकर के प्रयासो के परिणामस्वरूप पुना मे महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुआ।

1921 से 1947 तक :-

इस अवधि मे निम्न कारणो के ~~फलस्वरूप~~ फलस्वरूप स्त्री शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र मे अद्वितीय प्रगति हुई (1) महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के काल स्त्रियो मे उत्पन्न होने वाली जागृति (2) सन् 1925 मे राष्ट्रीय महिला परिषद की स्थापना (3) सन् 1927 मे आयोजित किये जाने वाले अखिल भारतीय स्त्री शिक्षा सम्मेलन द्वारा शैक्षिक अवसरो की समानता की माग (4) द्वैध शासन को अवधी मे भारतीय शिक्षा पर भारतीयो मन्त्रियो का नियन्त्रण (5) प्रान्तीय स्वशासन की ~~अवधि~~ अवधि मे स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन।

Scanned by TapScanner